

हे सा सा विमो स्र सा सा भमा ॥ को लि ध मे व न भमा यममा ॥
ह वै न न व न त ले पु मा धि ज्ञान ला सु र ग र न न को
नाम दिन यानि र स्म ता आ ज ना ग ली ॥ न व न ली ॥ न व न ली ॥
न पा य नि दु ष ना स तौ ली ॥ मि त ता डि को ग मे दा स वा हि मे रा
व रे ॥ ३ ॥ इ इ य भ मा ॥ क से ल्य ला ता प्र न को नाम यो वि धि ॥ य म
पु पा व म न य स ति म् य ग रि ता च भु त को प्र र ता ग न व
पु पा व म न य स ति म् य ग रि ता च भु त को प्र र ता ग न व

हरिको नाम तिघा निज्यय नासाय नसं ३४ होला ॥ पस्तो श्री कृ ।
न नासाय नको न जग गलु सिधरे ॥ ४ ॥ मुधि थिर अमंदा मया ॥
मे घजस्तो को रो वल्लु पित्त वस्तु राइ वल्लु ॥ कस्तु रिम निमय को
मा लाराइ वल्लु पुन्य सरित कमर पुत्र जस्तो ने न विभुवन का ना
५ ॥ यस्तो परम स्वतना सायन नमस्तु ता ॥ १ ॥ भिमसेन अमना ॥
६ ॥ श्री ना विस्तु अवा साह प्रवतार रि कन हितं न दै न मे
व न ग लाराया नाइ पुधि धनु वा नउ वा रि ल्याया उ नै विस्तु

त्ये म कन दया प्रसन्न हनु ह वस्ता ॥ १ ॥ अरु न ल्य भंदा मया
विस्तु को विस्तु नाग नु महा गग धे दू वा क न मया का ॥ के
हे अ तं रूप कै हे मे विंदु रूप कै हे के स व रूप किन
न हा ना ना रूप धारना ग ल्या प्र मु का समाप नि ना ना
ग रि वे ला ने तो का विस्तार ग रि विज्ञा ग ग न्या सा च सु स
ऊ न ग तिदि न्या मस्तो हरिको सर न ह वस्ता ॥ ६ ॥ न क क

समन्ता ॥ कदाचित्पुर्वं जन्मकापापं त्वर्न कर्मभोग
होता ॥ तस्यार्थं हे पुरमेस्वर मे सोहृद यमापुत्रव
स्तु हवस, मय कर्म कृतं होत ॥ २॥ सह देव त्वजन्मा ॥ महि
तं त्वस्मिन् जन्मवाराह को नमस्कारा ॥ गरीयहि नमस्कार
॥ १० ॥ कृत्यं ते भानि ॥ या कृता कर्म को कदाविवातगारि
क न को ज्ञानमात्रं मोहं हृद ॥ तस्मै सा मा व नि विष्णु भक्त

सो वर

३५५ *

गर्तु ॥ ११ ॥ मार्क न्ना समन्ता भया ॥ कसै त्य श्री कृष्ण
सा इमो विधिं संगमता नाग तौ रातादिनै ॥ संता माप
नि उथ नो माप नि पर ते स्वर को, नाम तनु रि, ~~मन~~ न
भक्त गता ॥ तस्म नुष्प क न मो द्य हो ता, तस्व गदिन
हो मा घी उय क लं हृ त सि ग रि पाय पक्ति जाला सन्य
स न्य त्य हो ॥ १२ ॥ इयं लिख्य भानि ॥ परस्व त हे श्री कृष्ण

मकन कि तपंत ग विर ता क स पिसा व. मनुष्य सादि
जा हा हा हा र नम हो ला. दो हां २ निब्य प्र हा न ल त म्हा वर
नमा. पुना मग न्मा ॥ भगत महा वि न नु स क न्या गरि
प्र स र भ प्र हा व स ॥ १३ ॥ सु भ डा ल्य भ न्या ॥ को हि म न्य
म श्री कृष्ण पुना म ग न्मा. तस्म नु ष्य के ना ॥ द सा स्व म धि
रु रु ग ल्या वा हि प नि पां दो मी ता पा थ गरि मे वि न दो

म ग ल्या व दो प न्य दे । सु र्ध ल्य मे वि न भ न न द्या दि
रु रु ग ल्या दा न ति ध रा नी ग नु भं द ॥ गो वि न को भ न न
स का धा रि पु न्य दे । द सा स्व मे वि रु रु ग ल्या पु न के र
र न्म ह द ॥ श्री कृष्ण को पु ना म ग ल्या के न पु न ग र्भ वा
त दै ना ॥ १४ ॥ सु भि स न्यै ल्य भ न्या ॥ हे मे वि न हे ह ल्य मे ला
ले हे मु क र हे कृष्ण व क ध र ॥ नि म्हा व र न को दि न प्रा तं

निदान नामस्कार ग नंदपापसंनममाज्ञावत् ॥ १५ ॥ ध
रुधुसुते भन्मा ॥ हे रामनातामन हे वासुदेव हे जो विदहे सु
रें दहे कृष्ण ॥ हे के सवहे अतरे एहे नृसिंह हे विष्णु ये संसार
को, कारन जिव तच्छ गर ॥ १६ ॥ सा त्म कित्य भन्मा ॥ वरमेस्वर
को रूप ग न को महिमा अथ हा द्य मत्ता श्री कृष्ण वा मो कर
अथ तत्तमा वरन को नमस्कार दं ॥ १७ ॥ उधव स भद्रा भद्रा

को हि मनुष्य स श्री कृष्ण क नद्यादि अरु देवता को से गे दे
सुमुख हो गंग को निरमा वसि क पतु स्मार क प को पा निषाया
रु लो ॥ १८ ॥ धी म्य स भन्मा ॥ पा नि का त मि प मा व स्या मा वा तो मा
धर मा भयो दिन प्रति तम्हा नमस्कार गत्या को दं ॥ उहि धमा वि
बारि हे पर मेस्वर तम्हा वरन नमस्कार दं संतुष्ट हुन हो ता ॥ १९ ॥
सं जय स भन्मा ॥ को हि मनुष्य दुषि आरस्य विपति दुष पत्मा
को कता रोगा भया पति हृदि को नाम दिमा पदि दुष स्वक ना

सत्रै सुवि हो ला ॥२०॥ अकर ल्य विंतिग त्या ॥ हे ना ला मन
त म्हा वर न्को दास को दास महं सत्ताइ गति वक्कन हनु
हो तो ॥ अ ल्य मे तो भाइ त पाइ का वर न को दर्त्त पा जे ॥२१॥
॥ विदु र ल्य विंतिग त्या ॥ हे विष्णु भक्त का वर स मार ह न्या शक्ति
हो त म्हा वर न को दास को दास मह ॥ हे प्रभु भनि विंतिग
त्या ॥ न म न्मा त्त मा प नि त पाइ को दास मह भ न्या ॥२२॥ भि
ष्म ल्य भरा भयो ॥ हे कृष्ण जो विप न्तिकार मा भाइ व धु दे विद्वत्मा

कास मय मा ॥ त म्हा वर न मा रित ल्य ग तु बाही दं हे वर
मे स्वर भ नि विंतिग त्या ॥२३॥ ॥५॥ दो ना वा प्य ले विंतिग
त्या ॥ जे वि नि ना म ग त्या को दै ल्यः विष्णु ल्य मा ल्यार
उ प नि स्व र्ग वा स भ यो ॥ विष्णु को को ध ले मा मा को य
नि व र दा न दि पा ज स्तो भ यो ॥ प्र सा पुर मे स्वर श्री कृ
ष्ण को वा र मा ल न म स्कार ॥ कृ पा वा प्य ले विंतिग त्या

हे मधु कैठ भार पर मे स्वर अनिविति गत्माः गौ हा
गौ हाः हू मे ऊ न हो ला ॥ वा हा वा हा त मा वर ए र विं
द स क पा रा पु हो लाः प्रति आस मा हा मि द्वे भ न वि प
र मे स्वर क ह्य थे विंति गत्मा ॥ २५ ॥ अथ धातु भदा भया
हे गो विंद हे के स व हे ज ना ड न हे वा सु दे व हे म धु कै त
हे म धु सु द न हे विस्व रूपः प द्य ने न ना ला प न ॥ हे

अ धु त हे नृ सिंह वारं वारं त पा पि को र र न मा त म
स्कार मे रो उ धार ग तु बा हिं द ॥ २६ ॥ क ए ति भ न्ना
॥ हे ए र षो त म विह्व म ला इ त पा भी का वर ए को दा
त ग दि रा पु रु व स ॥ त पा पि का र र ना र विं दु को सेवा
म ग र द्धु मे रो उ धार ग तु रु व स ॥ २७ ॥ धृ त रा ष्ट रे
विंति गत्मा ॥ पु ता स न म स्कार ग मा का य भा व ले वा व न

रूप भै ना राय ए त्रि विक्रम रूप धर ॥ मुनि शारंग जग
दा व क धारण गं न्मा प्रस्ता पुरुषो त्त स को वारं वारं नम
स्कारा ॥ २८ ॥ मां धर्म विंति ग म्मा ॥ हे पु भु दे व दे व मेरो
स वै कर्म नया पि हो । पि ता मा भाइ बंधु संगि विद्या
द्वय स वै नया त्रि हो : सक न उ धार गारि व क्त उ ह व स
॥ २९ ॥ दुख दु ले भ न्मा ॥ हे य ह ॥ हे प्र ह्म आ नंदु गो वि द
मा धं व अनंत के सव श्री कृष्ण हृषिकेश व ॥ वासु दे

व य स्ता पर मे स्वर क न वारं म्बारं नम स्कारा ॥ ३० ॥ जय द ध
ने विंति ग म्मा ॥ हे कृष्ण उ र्ध्व स्वरूपः परं वृक्ष अनंत मु ति
यो गे स्वर ॥ यो गे स्वरूप तपा त्रि को वर न मा तम स्कार ॥
॥ ३१ ॥ विकर्ण अ विंति ग म्मा ॥ हे श्री कृष्ण वासु दे व दे व कि
का पु त्र तंद का नंद गे कर मारा जग न्मा ॥ राम कृष्ण गे
विन्द भ न्मा का तया मि हो : हे यर मे स्वर वारं म्बारं त पा मि

कै नमस्कार दूं ॥३२॥ सोम दत्त त्रय विंतिगर्दा भयाः ॥ हे प्र
मे स्वर परम कल्याण विस्व भावन ॥ वासुदेव सांत्तस्व
रूप प्रसा का स्वा मि तपा त्रि हो ॥ प्रस्ता तपात्रिक न को णि को ति
नमस्कार दूं ॥३३॥ विरात से भया ॥ हे वाक्क न का भक्त देव
ता गौ वाक्क ए का संसार को हित ॥ श्री कृष्ण जो विंदत मा
वर न ए मा नमस्कार दूं ॥३४॥ सत्य विंतिग ल्या ॥ तपात्रि

वा वत्त संवेत्पी तावर पै हिर ह न्या म्र यु त तपात्रिका य
र ए मा सर्वै ल्य पु नाम ग र्द त न यु ए मि क ए क सै को
भ प दै न ॥३५॥ वर भ द ल्य विंतिग ल्या ॥ हे श्री कृष्ण क
र ए मा म प्र मो सै सार या प का स मु द मा ॥ इति रे र ह्या काम
नुष्ण क न गति स ग ति दि न्या हो ॥३६॥ श्री कृष्ण जो ज्ञा
ग र्दा भया ॥ को हि म नुष्ण ल्य कृष्ण भ ति दि न यु ति स्म

रत्ना नाम सित्ता कनः॥ जसो गति या निवा तप द्य पत्र
कि कैं छ तसै न कैं दे विजि कि वै कैं ए वास दि न्या द्द
पु न क ह्य ल्य आश भया॥ हे रोक हो जसै मेरो नाम मु
कैं न नर सिं ह ज ना ई न भ नि ध्या न ग लो॥ तस्क न स
त्य ले वै कैं वास मि लो॥ ३७॥ इस्वर ले आश ग ल्यो॥
जस ल्य ना लाम ए को नाम दिन पति ज न्या ला मिष्ठ को

को दर्स नु वाया॥ फदि गंग दि सवै तिर्थ सा ह्यो नते
तिस्को ति दे व ता को पुत्रा गदि दर्स नु वाया वा हिंय
ति॥ श्री कृष्ण को ध्या व न्ना ग या व डो पु न्य द्द॥ ३८॥
॥ सु क ल्य भ न्या॥ जाला हरि के था वा विर हं द्द नु ता हा
गंग जमु ना सर स्व ति स वै ती र्थ ता हा आइ स निर
ह द्द॥ तव त क्ता उ मा क न पवित्र भु मि भ नु ज सै

अथ विन भंलात खणन कवा सहोला ॥१॥ यम उवाच नर के
ये मले भं न्या ॥ तले हरिक था यक विनला दे वं नुला
त सुकण न कवा उवाच रहोला ॥४१॥ नारद त्म भन्ना
को हिम नुष्य कत कृष्ण भक्ति ग द्वा पि ला पि
भन्ना हु दे न ॥ या पि ला पि सुव माय नि ध नं तु त्या

उ ना को इ क्ष ग द्वा ध न त्म धर्म म ह दै न कृष्ण भक्ति
ह मा म नुष्य पुरो ह दै न मा ला ह दै न स्को १ ज न्म
विन्मा व हु ते सु पि ह दै कृष्ण भक्ति त ग न्या सा सु
न गो न्या क न क्षा धर्म होला ॥४२॥ प ला द त्म भन्ना
हे प्र भु श्री कृष्ण मने क ह आर ह आ रं ज न्म जा द

ना हा तपा भि को भक्ति गार्हसक न्याग रि दया प्रस
वृ हु नु हो ला ॥ पुन प्रका द ले भनि ॥ हे घर मे स्वर
गि केल भ ग वा न तपा इ को बर न मा मे ले निश्च
य भक्ति गार्हसक न्याग रि दया गरा जाउ स प्रस
न हे नु हो ला ॥ ४३ ॥ विखा मि वै भंदा भया ॥ ॥ ज स्मरा
ब ले दि न पु ति ज ग हु न नारा य ए को ध्यान गार्हसक

न्याकन ॥ ति र्धस्मान जे ज ग रा भंदा श्री क को ध्यान गरा
को व डो पुन्य कं ॥ ४५ ॥ म म द गि ले भंदा भया ॥ ज स्मर
ब ले हरि को नाम मं गल गा वला त त्का हू द य मा क ह्य
ले वा स ग र्क न ॥ त त्का ग रे मा स ये आ न द हो ला ॥ ४६ ॥
ब ल दि म व वि दं कं न ॥ स द मं ग ल हो ला ॥ भार वा ज ले भ

३५

न्या ॥ ॥ ज जो हृदय फल फल ज जो निर्मल क ॥ न जो हृ
दय मा श्री क ह्वे व सुद न न त क न सदा जय होला गो त म
ले वि ति गया ॥ को रि गो दान गया को गहन मा का सि ह्यो न य
को ॥ म क र मा यु या ग गया को र सु मे त पर्व त स मा रा य ज मा ति
र ए दा ए ग या ^{को} ति को ज ति पु ए य क ॥ मो स वै प्रा त स म य
मा गो विं द ज य्या को व रो व र पु ए य क ॥ ॥ ३ ॥

अ मि ले भ न्या ॥ शान पान ग व य नि गो विं द ज पु ग य य नि गो विं
द को ग न् ॥ थ्या न य नि गो विं द को ग न् ॥ स दा रा व दा गो विं द त न्
स का ठे रे पु ए य क ॥ ^{॥ ३ ॥} ये न ॥ क से ले भ न्या त्रि य दो र य यि क
ए ॥ ज से ले मो ला दू ह ॥ गो विं द को त्रि य क्ष र ज य्या इ स प्र स स
प्र ज ह य र लो के ज क्षी र हो ला ॥ पि न्त व क ए ग्रा ह न न्या फ
क न स र ग वा स हो ला ॥ श्री वा द रा य ए रे वि ति गं धा भ या ॥

हे प्रभु तू कल्पे वृक्षः शूनं तू कामधृते न वन्दे विंता
मनिमो विहृद ॥ हे हर तू मोना मरि न्या कण विषम
मै काल माश्रुते न भयापि निशु वीत होला ॥ अन्तपुर
मे सर को वारं म्यार न मस्कार ॥ हरि उवाच ॥ हे सर्व
रूप देव देव की प्राप्ति नन्द देव कि को उधार ग
न्या ॥ कश्चिद्भु सरे मैव वरुण भयाकाः प्रिथी उधार ग

न्याः प्र्याम वन भयाका ॥ पृथिको जगज न्याः यता परम
स्वर विस्वरूपः म्कुन्द को न मस्कार ॥ मिपे लाले भन्या
॥ दे श्री ० रामः नरसिंहरूपः गरुड वाहनः ॥ जगदाधारि वीर्या
पतिः पद्मधारि ॥ यं लोह पचतर्कीह श्रीकृष्ण वृष्णीक
सर्प को विषमारि साध गन्या ॥ के प्र वं हरिः जगंत का
गरुः यस्ता प्रमे स्वर को न मस्कार ॥ ह वि होत्र ले भन्या ॥

8514

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

Handwritten text in Devanagari script, likely a list or inventory, written on aged, stained paper. The text is organized into three horizontal lines, separated by faint horizontal lines. The first line contains a series of characters, some of which are underlined. The second line continues the sequence of characters. The third line also contains a series of characters, some underlined. The handwriting is somewhat stylized and the ink is dark, contrasting with the aged, yellowish-brown paper.

हे कृष्ण तिमीरो वनाया कोः यो पिंजलाः य सै पिंजला मा
रा जहं स वस्यामा ॥ क प्रवात पितले जोर भया को स
मयमाः या वामह तारिदा ज्यः भा इ इस्त मीत्र क सै रे उ
धार शर्न स के न्या द इ नः विद्युरले भन्याः दे पर मे स्वर त
पाह को न मस्कारः क्या ग्रास मा जिव मरोदः प्र की को ग्रा
स इ इ न ॥ म क न त पाह का वर न को भ क ले म अदि

म क न द आराधन ह व स ॥ व सि फु र वि ती ज ग्रा रा स
म न ष ले मं ग ल व ना उ ला व ना या प नी श्री कृष्ण को ना
म स म नो ह न्याः मं ग ल व ना उं द न त लो पा प स वै भ
स म हं व न ॥ मृग ध न्म र भ लि ॥ ॥ हे श्री कृष्ण निना म लित्या
कृण पाप स वै कृदि तां कः त म न्म ष ले ह रि को ना म मं ग ल
ग र्ग क ॥ उ सु की पा प स वै त ले वा य ले वा द ल पर ह

तस्यै पापं निउ रिगं न्यः तस्यार्थं उद विन्द को नाम वारं वा
र लि न् ॥ कस्य पोले भ न्या ॥ श्री कृष्ण को प्रनाम गं न्या म
नूषे कोः पाप सं च ना ज्ञा या को म वै ॥ च सौ वत्र री
पुर्वत स्वन्द स्वन्द हृद् पाप पनी त सै हो रा ॥ दुर्जो धन
ले भ न्या ॥ कृष्ण कृष्ण कर्मो आ यु ले ग स्यो जो र्गं धर्म
ग स्या धर्म फल हो सा पाप ग स्या या य फल मिहं दे। जो व

मं हं स्व हे रि य ल स्य त श्री कृष्ण ले स व भोग दि हं न
य सा प ल मे स्य त श्री कृष्ण को न मो स्कार ॥ य न ॥ दुर्जो
धन भं ह ॥ हे व ल मे स्य र श्री कृष्ण त पा इ को ग सा यो म
गर हं म सा इ दोष न हि हे म धु सु द न दोष सा या यान
न सा या प नि त या श्री का व ल नै मा हं त पा जि क न वा लं
स्या लं त मे स्कार हं ॥ भृ ग ले भ न्या ॥ को हि य र मा पि

ले तन्वा शक्ति क नः ग्व विन्द को नाम पा दो गान्ध्या वं
सय १०६ आठ आ वं तै या ठ गरि ध्या न ग ला ॥ अथो वस
मज रे ग ला को यु एर ह दं ॥ लौ म सत्य न न्या ॥ दिन पु ति
ना सा प्र न को निर्मल नाम रि नु दिन पु ति ना सा प्र न का ॥
पा ड्य द्र को न मो स्का स ग नुः अ वि ना सि मं व ल्य जा प ग नु
॥ सौ न क ले भ न्या ॥ हरि को नाम सि ए म नु ष्य क न स म स

क ला न हो ला सु या व हो ला ॥ आ पू आत्मा परा आत्मा वरो
व दो वि क्षा न्यो म नु ष्य हरि का स ल न ह मा गां ह ॥ ग म
ले न न्या ॥ कौ हि म नु ष्य व व नै मा पि हे ना रा य नु ज पु हे
मं व ले ज प न्या ला इ ॥ भ क्त क न न क जा नु य स दे न ॥ म व
न हु न्या मु षै क न न क वा स भ यो प्रा नि क्क आ स जे दं ॥
॥ दा ल भ म ले भ न्या ॥ ज स म नु ष्य ल्य वि द्यु भ क्ति न ग रि
दे व ला को सी च ना ग त्या य नि क्य पु जे क न द ॥ न मो ना रा

म नो नाम विष्णु ज पुर सर्व सा ध ना ग स्मा यानि का य जौ ज ह ॥
न मो नाराय नो नाम विष्णु ज पुर सर्व सा ध कह न्दे ॥ अरु
म व ज्ञा न्या सो क्का य जौ जन ज्ञानि जन ल्य ता विष्णु कै भक्ति
ग न्दु ॥ वै संपा प त ल्य भ दा भ मा ॥ जा हा जा हा जो ग्य स्वर वा हा
श्री कह हं ह जा हा ध नु धा रि जा हा अ ऊ न ह हं ॥ जा हा श्री
क ल व स द न ॥ ता हा स कि ह ह न्दी ल दिने भ मा का ल उ मा
कि हो ला श्री जा हा नाराय न व स द न हा स कि थि र हो ला ॥

अ गिर ल्य भ न्या ॥ अ स्म नु ष्य ल्य म न ल्य थि र ग रि ह रि को
ला म ज प हं उ स्को पा प ज न्ति हं स वै भ स्म हो इ शां ह ॥
प रा त र ल्य भ न्या ॥ अ स्म नु ष्य ल्य भ रि स ष्य ग रि त वा पि । कौ
तो म डु इ म्भु धर ह भ नि ज क न ॥ अ स्म नु ष्य क न स सार
का पा प को ५ लो न दि वा र ग रि स ष्य ल्य वै क थ जा न्द ॥
यो ल स्तो ल्य भ न्या ॥ हे त्रि का स दा का लं म धु र व व न वो लु

दिहल नहुनु सदा कारं गै विद को निर्मल नाम मात्र
तिनु ॥ नारायण का नाम से मुक्त भै वै कृष्ण वास मित्र ॥
॥ वास से आशा गत्वा ॥ विदुर को वचसत्य सत्य ग रिमानु
शानि जन त्य विष्णु के भक्ति गनु ॥ विष्णु के नाम भया को
ता सुई सुनु ॥ धन तरि आशो गत्वा ॥ हे अच्युत अनंत गोवि
न्द नारायण का नाम लिखा कन ॥ धर्म के मेदानत पत्नी अरु दे
ता को सेवा तिथि जानु पदै न ॥ श्री नारायण का नाम मात्र

ले धर्म के मेवोष द्विप विष्णु को नाम लिखा यद्दि पाव दुष
रोग स वैद्य ति भै वैद्य धं वास हो सा ॥ मार्कण्डेय भन्ना ॥ ज
ह स्वर्ग मोक्ष सुषादिना जगत्का गुरु हरि को चित्त नान गन्धि
सायिका गति हो सा ॥ शान्ति जन लेया दो गति नावा ० गदि
सद्यै भक्त गनु सिके नाले घर मारा चित्त मस्कार रग न्धि
सायि वदो धन द्यो ॥ अगत्तो मुनि त्य आशा प्रया ॥ जस्म

नृप्य ल्य विष्णु को स्तुति गरि ध्या न ग द्धनं ॥ स्ता प्रियो तिज
शग ल्या को य न ह द्ध ॥ वा म दे व ल्य आ श भया ॥ जा हा जा हा
हरि को क था हं द्ध ता हा क रु थ ग पु या ग इ मु ना क म
लौ प ति ॥ स वै ति र्थ आ इ ग ध कि के दार ग या पुष्क र णि ते
ति स्को ति दे व ता दे वि ग न ति मा धा रं न स वै आ इ क न
हरि क था सु निर ह द्ध ॥ सु क दे व ल्य न न्या म मे ले सम

स सा सु हे ल्या पुरा न स न्या विष्णु का ध्या न इ ति पुरो के
ति र ह द्ध त सु अ र्थ स ज्ञा नित्य विष्णु के ध्या न ग नु द्ध
॥ श्री महा दे व ल्य आ शी भया ॥ इ मे विष्णु को ध्या न ग णि स
क न्या न उ स को स लि र स पा नि र्म ल ह न द्ध रोग व्या ध स
वै जा ह्द वै द्र य नि विष्णु ह न ॥ सौ न क ल्य आ ज भया ॥
प्रो ज न ग दा मा य नि ज म विष्णु भानि सु य मान न ज

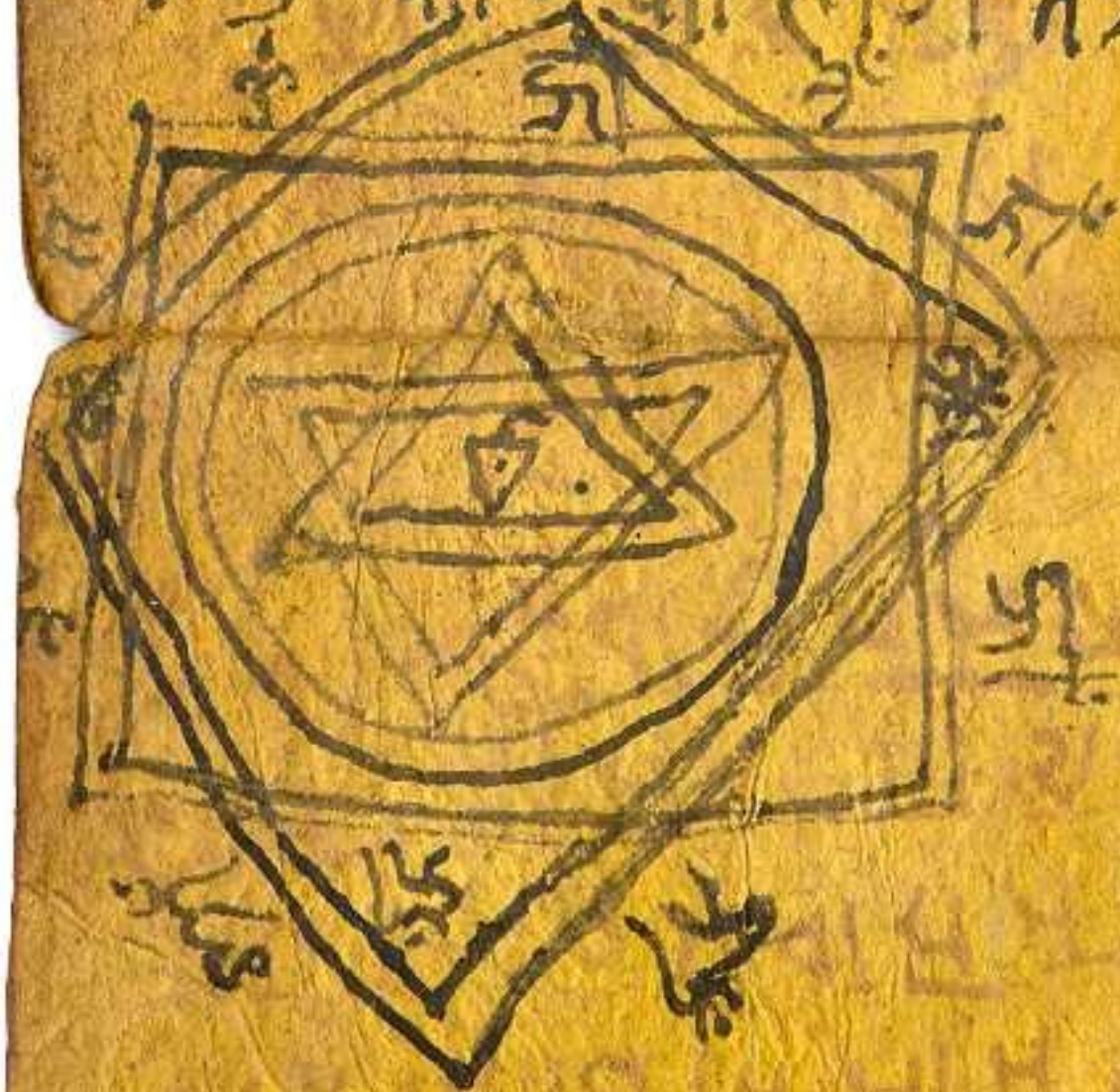
रिषात्मा मनुष्य को जन्म वृथा हो ॥ हरि कथा कहंदा मा
श्र को तिर वि ते गरिराशा मनुष्य न के जोन्द ॥ मनुष्य
को जन्म भै कन श्र लि कु ति विष्णु को भक्ति नगना ला
इ का उय कार का जु ग ति हो ला ॥ पुन ॥ १ ॥ मा महे स्वर
दे वरी का न यो धन म वि रो क ल ॥ पर मे स्वर नारा
प न क न स्ते षु गरिराशा छन ॥ सन क मा र ल च न्या ॥

श्री ॥ जस्ते ॥ जस्ते संष व के ग दा प द्म धा ल ना गरि गरु ध
वा ह न ग दि द्वा नारा म न क ए न म स्कार न्या ॥ पा दो गा ता
पा ० ग ए र्ण को दे हे प वि ने रू रू व दो पु न हो ला ॥ ध न
अ न्य ह न्या स दि र निर्म ल तु न्या रो क ल मा सं ग म श्रि न
न्या पा प ना स ना सी न्या सा ति ग न्या स्तु ति हो ॥ पुन श्र थ ॥
को हि म नुष्य प्रा त उ थि सु वि भै श्री विष्णु को नमस्कार

ग रि ॥ या दो गा ता सो न वा ० ग रि कि से ले वा ० ग ल्या को सु
तिर निर रु छ न ॥ क से ले पुस्त क ले ल्या इरा व छ न
ले प्रा पद न्या सु भा पुस्त क सा र्णी वस्त क नु ल्या इधर
मा ला व न्या ॥ इ वारे ज ना के न व दो व दो पु न्य छ न
कु ग भारि स दा व न ग ल्या को पु न्य ह छ न ॥ प से पु न्य
ल्य ह जालुं मे दा न ग ल्या को पु न्य छ न ॥ ह ॥ ह जालुं

ति ग ल्या प ना ग ल्या को पु न्य छ न पा य ह रा उ छ ॥ विह
रो क जा छ न ॥ पु न्य छ न ॥ ज सो ल्य वा द व गा ता वा ० ग
रि न क ग ह त स सा इ त ल्या ले पु न्य ह छ ॥ पा य
स वै मो वो ना ग रि स त्प स त्प ल्य वै क थ जा छ ॥ इति
श्री वा लु गा ता के ना थ सं पु र्ण समा य त सु भा ॥
स्व १ दे ५ ५ मि जा ड व दि ० पु न ज सो सह म म

ॐ क्रीं क्रीं स्व ना क्री रव न हा ति क ना ह न मां किं वा स
 स्वा हा ॥ धा न ॥ १२ ॥ स वा न रव न हा न मा वा थ वृ म ॥
 सि मि न उ का मा पृ म ॥ थ प्रा अ मः अ म तिः अ त नि स नि म
 त म ना न के ॥ हो ज य त्र य त व न श्री ष द क रू नि कें कें
 म ॐ वा व का तु ग त म ॥



पू ज्ञा मा य तु ग स्वा मः स म प्र क्री म
 मा ना । आ किः म १७ अ वा का म
 ति त ग म मा म म तां वि म म त ॥

ॐ त्रै लो क न ह त वि ना थ म्ब लि
 ती य ना ति र जि म र व स्वा हा धा
 ॥ २ ॥ र जि व रु न ॥ को म्ब धा ल ॥ अ धि म
 रु न ॥

२ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ध्या १२ ॥ मा लया गदको ला गमा जिव
२ ॐ क्रीं ता सा म न र व न भा स्वाहा ॥ अथ ७ ॥ ना ला
म ग सिं प र मा ॥ ॥ २ ॐ ह न मा ना प्र त्या हा ॥ अथ १० ॥
घा त स य स ता य ॥ ॥ २ ॐ क्रीं क्रीं व र्ज डा गा नि रुद्र का
ति मि त नि मि र नि ॐ क्रीं क्रीं क्रीं स्वा हा ॥ अ ॥ १५ ॥ ति रुद्र

य व नं ग्या तं व मा स स्या न स ५ तिस क ला जि अ ॥
 र ते कौ कौ वृ ज जा नि मा रु शो लो ॥ ध्रु प २ ॥ श्री साधु म
 र ॐ कौ कौ कौ स्या त्वा धा त १ ॥ व्या सा ध्रु म २ ॥ ॥ २ ॐ हं स
 र्हा हं स हूं स हं व हूं स्या त्वा धा प १० ॥ ना त्व ता न क र वं म ग
 काः का प्रा प न स ना वि म म रू र्वा त सि म व त स ता नः न ज द
 सि कं द पि ॥

२॥ ॐ कौं न स धी कौं न स्या भाने ॥ १ ॥ इह त्वा क प्रारम्भ
विषं सं ७ मा घन के को ५ ग को इह त्वा क प्रारम्भ

ग्रा गुर ॐ ज्यं गुर ग्यं मानन ध्या स क्रा ति धू न कर
तिल क न्या के ति का सि न धो पितित्ता मि सर्व धो मि
मृष ता मि कु म धो मि कु म ता मि ज्ञां गंधो मि ज्ञां गला मि
न ते धो मि ज्य ता ता मि श्री महा द व यान व ति कि वा रा ॥

३॥ स्म त्वा न्ना न स का प्रा रा क इह स द य के ध उ त्प्रा
न के ना ना १ त स ता ना १ वि नि ॥ त क मा सि रो ग ना स
३॥ स्म त्वा न्ना न ना ना २ वि नि ता ना २ न स्या त्वा न्ना हा क्ता मा
व प्र न स ध न सि ज्ज हा ना स धे उ ति स त मा ब्रा के
मि सा हा ५ मा ना स ॥ ना ता १ न अ ग्य ३ म ल न य ग्य ॥
विष व द य न त्या स ग्य ग न व ह स वि ति स न द्रा इ ह न
इ न ता ३ इ ह स क्ति ॥ २ ॥ ग्रा गुर न स ग म ध न ति हा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॥

श्री गणेशाय नमो ॥ ॥ ^तबर वंथल नू लगानिद्र वनं लग्नोद
र सुंदर दंता व्यात विचारिता निवनितासी श्री स्वभा
कर ॥ प्रस्यं दंता च्युगं चरु दुप वया लोलगं चरु
ल ॥ वंदे सई ल सुता सुतंग नपति सिद्धि प्रदं करि
॥ १ ॥ नमः स ल विते

~~श्री गणेशाय नमः~~
श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ सिद्धिं विप्रैः प्रपद्यते ॥ ॥ ॥ महागा
जा विजै किं विजै ॥ ॥ दिवा ॥ हे महागाज सिद्धि विजै किं विजै
॥ ॥ महागाज अरुण ॥ ॥ विष्णु म ॥ ॥ दाने ॥ ॥ हम्

कोनिगण्ड

1/58

ASMA ARCHIVES

Handwritten text in Devanagari script, likely a musical notation or a list of items, written on aged, yellowed paper. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be musical notes or symbols.

Handwritten text in Devanagari script, continuing from the top page, written on aged, yellowed paper. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be musical notes or symbols.